JAGRAN Josh your guide to success

WWW.JAGRANJOSH.COM

छत्तीसगढ़ राज्य सेवा मुख्य परीक्षा 2011: वाणिज्य एवं लेखाशास्त्र का पाठ्यक्रम

वाणिज्य एवं लेखाशास्त्र

प्रथम प्रश्न पत्र

लेखांकन एवं व्यावसायिक वित्त

1. कंपनी लेखों की उन्नत समस्यायें – कंपनी का सम्मिश्रण, अंतर्लयन – और पुनर्निर्माण, कंपनी का परिसमापन, नियंत्रण कंपनियों के लेखे, सुनाम (ख्याति–गुडविल) एवं लेखांकन एवं व्यवसायिक वित्त सामान्य बीमा कम्पनियों तथा कंपनियों के लेखे।

2. लागत लेखांकन की प्रकृति एवं प्रकार्य– लागत वर्गीकरण, अर्ध परिवर्तनीय लागतों को स्थिर एवं परिवर्तनीय प्रभागों में विभाजित करने की तकनीकी, परिव्यय लगाने के आधार और उनमें अंतर्निहित दोष लागत लेखांकन में सामग्री एवं श्रम की अभिक्रिया (ट्रीटमेंट) एवं नियंत्रण, उपकार्य (जाब) लागत निर्धारण, प्रक्रिया लागत लेखांकन की सरल समस्यायें, लागत एवं वित्तीय अभिलेखों का समाधन (रिकांसिलिएशन), सीमान्त लागत निर्धारण, लागत मात्रा लाभ संबंध, बीजगणितीय सूत्र एवं रेखाचित्रीय (ग्राफीय) निरूपण बजटीय नियंत्रण के सिद्धान्त, नम्य बजट ।

3. आयकर अधिनियम 1961 के प्रमुख प्रावधान– परिभाषायें कृषि आयकरदाता (निर्धारिती) सकल कुल आय, कुल आय, गत वर्ष, लाभांश करदाता का निवास स्थान एवं निवास स्थान के आधार पर करापात । सकल कुल आय में से कटौतियाँ, व्यक्ति करदाता की कर योग्य आय की अभिगणना संबंधी सरल समस्यायें ।

4. अंकेक्षण प्रकार्य की प्रकृति एवं महत्व– अंकेक्षण कार्य की योजना बनाना, संपत्तियों का मूल्यांकन एवं सत्यापन स्थायी, क्षयशील एवं चल संपत्तियाँ, दायित्वों का सत्यापन।

सीमित दायित्व कंपनियों का अंकेक्षण, कम्पनी अंकेक्षक की नियुक्ति पदस्थिति शक्तियाँ का सत्यापन।

अंशपूंजी तथा अंश हस्तांतरण का अंकेक्षण – अंकेक्षण प्रतिवेदन (रिपोर्ट) बैंकिग एवं बीमा कम्पनी के अंकेक्षण के विशेष मुद्दे । कम्प्यूटरीकृत लेखों का अंकेक्षण, लेखों के अंकेक्षण में कम्प्यूटरों का उपयोग।

5. वित्तीय प्रबंध की संकल्पना और क्षेत्र– फर्म (व्या. प्रतिष्ठान) के वित्तीय उद्देश्य, पूँजी बयटन पारंपरिक विरूद्ध बड्डागत – नकद प्रवाह तकनीकें वैकल्पिक पूंजी संरचना का अभिकल्पन, पूंजी लागत की संकल्पना, अल्पकालीन मध्यकालीन और दीर्घकालीन निधियों के स्त्रोत, परिवर्तनीय ऋण पत्र और सार्वजनिक बंधों (बांड्स) की भूमिका । अनुकुलतम लाभांश नीति का निर्धारण, लाभांशों के प्रकार कार्यशील पूँजी संरचना कार्यशील पूँजी की सकल, शुद्ध एवं प्रचलन चक्र संकल्पनायें, वित्तीय नियोजन और प्रबंध ा में कर नीतियों की भूमिका ।

6. वित्तीय संस्थायें – भारतीय मुद्रा बाजार का संगठन और कमियाँ (न्यूनताएं) उसके प्रमुख घटक और भारत में ग्रामीण बैंकिंग भारतीय रिजर्व बैंक की मौद्रिक एवं साख नीतियों का मूल्यांकन भारतीय पूँजी बाजार के घटक अखिल भारतीय सावधिक वित्तीय संस्थाओं (भारतीय औद्योगिक विकास बैंक, भारतीय औद्योगिक वित्त निगम, भारतीय औद्योगिक साख एवं निवेश निगम, भारतीय औद्योगिक पुनर्निर्माण निगम) के प्रकार्य और कार्यशीलन । भारतीय जीवन बीमा निगम तथा भारतीय यूनिट ट्रस्ट की निवेश नीतियाँ ।

द्वितीय प्रश्न पत्र
वाणिज्य एवं लेखा
(व्यावसायिक प्रबंधन)

1. प्रबंध के अवधारणात्मक आधार प्रबंध की आधुनिक अवधारणा, शब्दावली संबंधी विवाद, प्रबंध एक पेशे के रूप में, प्रबंध विज्ञान का विकास वैज्ञानिक प्रबंध, प्रबंध के प्रति प्रकार्यात्कम एवं व्यवहारात्मक उपागम, प्रबंध के प्रकार्य एवं प्रकार्यात्मक क्षेत्र, प्रबंध के सिद्धान्त प्रबंध के सामाजिक उत्तरदायित्व ।

2. **संगठन –सिद्धान्त एवं व्यवहार** – संगठन की अवधारणा एवं प्रकृति संगठन के लक्ष्य मूल एवं गौण लक्ष्य, एक एवं बहुल लक्ष्य औपचारिक संगठन रेखा प्रकार्यात्मक संगठन, रेखा एवं कर्मचारी संगठन, संगठन गुण दोष । अनौपचारिक संगठन उनके कार्य एवं सीमाएँ संगठनात्मक परिवर्तन परिवर्तन–प्रतिनिधि के रूप में परिवर्तन प्रबंध के संबंध में प्रतिरोध । संगठनात्मक विकास एवं प्रभावशीलता ।

3. **सेवीवर्गीय प्रबंध एवं औद्योगिक संबंध** – सेवीवर्गीय प्रकार्य की अवधारणाएं एवं प्रकृति कर्मचारी चयन एवं भर्ती, प्रस्तुतीकरण (Induction) एवं प्रशिक्षण पद्धतियाँ, प्रेरणात्मक भृत्ति –पद्धतियों सहित भृत्ति भुगतान की अन्य विधियाँ, अभिप्रेरणा की समस्याएँ वित्तीय एवं अवित्तीय अभिप्रेरणाएँ, सम्प्रेषण तथा नेतृत्व शैलियाँ

औद्योगिक संबंधों की प्रकृति एवं क्षेत्र – भारत के संदर्भ में श्रम संघवाद, सामूहिक सौदेबाजी प्रबंध में श्रमिकों की भागीदारी, औद्योगिक विवाद एवं उनके समाधान ।

4. **विपणन तथा विक्रय प्रबंध** – विपणन प्रबंध की अवधारणा एवं आधुनिक दर्शन, विपणन, विक्रय एवं वितरण, में अंतर, विपणन के प्रकार्य एवं विधियाँ । विक्रय प्रबंध के अंतर्गत विपणन मिश्रण तथा विपणन शोध के तत्व । विक्रय शक्ति का प्रबंध । विक्रय संवर्द्धन की रीतियाँ । विज्ञापन एवं वृहद मात्रा में फुटकर बिक्री ।

5. **विनियम साध्य विलेख पत्र अधिनियम, 1881 के प्रावधान** – शोधी बैंक एवं संग्राहक बैंक को प्राप्त वैधानिक सुरक्षा के विशेष संदर्भ में रेखांकन एवं पृष्ठांकन ।

बैंकों के निरीक्षण एवं नियमन के संदर्भ में बैंकिंग नियमन अधिनियम 1949 के प्रमुख प्रावधान ।

6. श्रम कल्याण, सामाजिक सुरक्षा, न्यूनतम मजदूरी एवं भुगतान के संबंध में वैधानिक प्रावधान।

7. वैध अनुबंध के आवश्यक लक्षण ।